ओमशांति। बच्चों ने गीत सुना। बच्चे ही इनका अर्थ समझते हैं। बाकी जिन्होंने गीत गाया है वह कुछ भी नहीं समझते हैं। न उनके साथ भगवान है, न उनको यह पता है कि भगवान कब आए अपने बच्चों को स्वर्ग का वर्सा देते हैं। बाप ने ही आकर सन्मुख अपने बच्चों को परिचय दिया है। वह ही बाप अब तेरे सन्मुख बैठे हैं और तुम उनसे सुन रहे हो। तुम्हीं तूफानों को समझते हो। वह लोग कैलेमिटीज़ आदि को तूफान समझ लेते हैं; परन्तु यह तो 5 विकारों रूपी माया के तूफान तुमको आते हैं। पुरुषार्थ में माया बहुत विघ्न डालती है; परन्तु इनकी परवाह न करनी है। सिर्फ बाप को अच्छी रीति याद करने से सब तूफान उड़ जाते हैं। जैसे बाबा ने कल रात को भी समझाया– बादशाह का बच्चा होगा तो उनको नशा होगा कि हमारा बाप बादशाह है। हम भी बेपरवाह बादशाह है। इस बादशाही का मैं मालिक हूँ। तुम बच्चों में भी कोई–2 को ऐसा पक्का निश्चय है और बाप को अपना बनाया है– बस, मेरा तो एक शिवबाबा, दूसरा न कोई। अपना बनाना कोई मासी का घर नहीं। बहुत बच्चे तो इन बातों को समझते नहीं; इसलिए माया हैरान करती है, और फिर बाप को ही छोड़ देते हैं। भगवान को तो दुनिया में कोई ज़रा भी नहीं जानते। इनको कहा भी गया है– बन्दर बुद्धि। शिवबाबा इन मम्मा–बाबा को भी कहते हैं– तुम बन्दर सेना थे, अब फिर तुमको मंदिर लायक बनाता हूँ। यह दुनिया है ही वैश्यालय; परन्तु ऐसा कोई भी मनुष्य नहीं समझता कि हम वैश्यालय में पड़े हैं। वैश्यालय में वैश्याएँ और लम्पट रहते हैं; परन्तु यह कोई थोड़े ही जानते हैं कि यह वैश्याओं और लम्पटों की दुनिया है। अब तुम बच्चे जानते हो कि हम असल में शिवालय के रहने वाले थे। अब तो वैश्याएँ–लम्पट बन पड़े हैं, बन्दर से भी बदतर हो गए हैं। बंदर में इतना तो क्रोध होता है जो आपस में लड़कर, जो एक/दो की खाल उतार देते हैं। मनुष्यों का क्रोध तो बंदर से भी तीखा है; इसलिए कहा जाता है– बन्दरों से भी बदतर; परन्तु मनुष्य यह थोड़े ही समझते कि हमारा सबसे बड़ा दुश्मन कौन है, जिसने हमको बंदर से भी बदतर बनाया है। अब बाप बैठ समझाते हैं कि तुम दिल रूपी दर्पण में अपनी शक्ल तो देखो! इस समय भारत बिल्कुल ही नालायक बन गया है। मनुष्य तो लायक–नालायक का अर्थ भी नहीं समझते। तुम जानते हो, हम पहले कितने नालायक, शूद्र थे। अब बाप लायक बनाते हैं; परन्तु जो श्रीमत पर नहीं चलते तो उन(को) माया कितना नालायक बनाती है। बाप श्रीमत देते हैं कि देह सहित जो कुछ भी तेरे पास है वह सब बलि चढ़ो, फिर तुमको ट्रस्टी बनाय देंगे, तेरा ममत्व मिटाय देंगे। तुम अबलाओं के लिए तो बहुत सहज है। खास राजस्थान के तरफ, राजाओं को अपने बच्चे नहीं होते हैं तो गोद में बहुत लेते हैं, एडॉप्ट करते हैं। तो उन बच्चों को कितनी खुशी होती होगी– हम इतनी प्रॉपर्टी के मालिक हैं। बड़े आदमियों के बच्चे को बड़ा नशा रहता है कि हम फलाने करोड़ पति के बच्चे हैं। उन बिचारों को इस ज्ञान का तो बिल्कुल पता नहीं। अब तुम जानते हो, इस ज्ञान में कितना भारी नशा रहता है। श्रीमत पर चलने से ही श्रेष्ठ बनेंगे, न चलने से कैसे बनेंगे! भगवान कहते हैं– बच्चे, तुमको तो कोई किस्म की परवाह नहीं। रात–दिन यह नशा रहना चाहिए कि हम बाप से 21 जन्मों के लिए स्वर्ग की राजाई का वर्सा ले रहे हैं। हम शिवबाबा की संतान बने हैं। वास्तव में, सभी आत्माएँ शिवबाबा की संतान हैं; परन्तु इस समय शिवबाबा आकर प्रैक्टिकल में अपने बच्चे बनाते हैं। अभी तुम सन्मुख बैठे हो। जानते हो, हमको शिवबाबा अपना बनाय, स्वर्ग का लायक बनाने राय अथवा मत देते हैं। तो फिर उस श्रीमत पर चलना पड़े; और किसके भी नाम–रूप में न फँसना है। एक शिवबाबा का ही नाम–रूप बुद्धि में रखना है। उनका नाम–रूप मनुष्यों से बिल्कुल न्यारा है। बाप कहते हैं– बच्चे, तुम हमारे थे। तुम भी निर्वाणधाम में रहने वाले थे। क्या तुमको भूल गया है कि हम आत्माएँ परमधाम में रहने वाली हैं। एक भी मनुष्य को यह पता नहीं कि हम आत्माएँ शांतिधाम की रहवासी हैं, हमारा स्वधर्म शांत है, यह शरीर ऑरगन्स हैं। कर्म करेंगे,

नहीं तो पार्ट कैसे बजावे! हम आत्मा निराकारी दुनिया के रहवासी हैं, यह बिल्कुल नहीं जानते। मनुष्य ही तो जानेंगे, जनावर थोड़े ही जानेंगे। परमात्मा को ही कुत्ते–बिल्ले सबमें धकेल दिया है, तो अपन को ही भूल गए हैं कि हम आत्मा हैं। कहते भी हैं, प०पि०प० ने क्राइस्ट को भी भेजा, फलाने पैगेम्बर को परमात्मा ने भेजा। तो कोई बाप है भेजने वाला। यह तो तुम बच्चे समझते हो, ड्रामा अनुसार हर एक आता है, भेजने आदि का सवाल ही नहीं उठता! मनुष्य कितना अज्ञान अंधेरे में हैं। तुम समझते हो, हम भी अज्ञानी थे, कुछ नहीं समझते थे– न बाप को, न अपन को, न रचना को जानते थे। अहम् आत्मा है। मम् शरीर कैसे अलग बनता है। हम आत्मा वहाँ से आई हैं, यह अभी बाप याद दिलाते हैं और बाप कहते हैं– यह सबको याद दिलाओ (बापदादा ने जो बॉम्बे में जो ईश्वरीय निमंत्रण के पत्रे छपवाए थे, जिसमें एक तरफ ल०ना० का चित्र, दूसरी तरफ शिव का चित्र, एक तरफ ईश्वरीय निमंत्रण, एड्रेस आदि हैं, उसके लिए बाबा बोले) देखो, यह निमंत्रण बहुत अच्छे बनाय हुए हैं। यह बहुत अच्छी चीज़ है। कई बच्चे लिखते हैं– हम अनुभव छपावे, यह छपावे। बाबा कहते हैं– सबसे अच्छी चीज़ हैं यह निमंत्रण। और कुछ भी छपाने से यह निमंत्रण पत्र 10 लाख छपाओ, खूब बाँटो। इसमें खर्चा नहीं है। मनुष्यों के पैसे बरबाद तो बरबाद होते जाते हैं। यह चीज़ बहुत अच्छी है। यह (शिव का चित्र) बाबा और यह (ल०ना० का चित्र) वर्सा लिखा हुआ है। प०पि०प० से आकर ऐसा (ल०ना० समान वर्सा लो)। तुम नर से ना० के स्टूडेंट्स हो न। वह साहुकार लोगों के बच्चे पढ़ते होंगे, खुश होते होंगे; परन्तु हमारे आगे तो वह कुछ नहीं हैं। अल्प काल सुख के लिए कितनी मेहनत करते हैं। तुम तो सदा सुख पाते हो। बाप से ऐसा वर्सा पाते हैं। यह सिर्फ तुम बच्चे ही कह सकते हो। कहाँ भी जाओ, हाथ में यह निमंत्रण पत्र हो। बोलो, यह आत्माओं का बाप स्वर्ग का रचता है, इनसे वर्सा कैसे मिलता है, लिखा हुआ है। और कुछ भी किताब आदि छपवाने की दरकार नहीं, सिर्फ निमत्रंण देना है। आजकल ऐरोप्लैन से पत्रे आदि फेंकते हैं। यह भी ऐरोप्लैन से गिरवाय सकते हैं अथवा कोई अख़बार में छपवाएँ। आपस में मिल राय कर यह छपवाओ– अंग्रेज़ी–हिन्दी–गुजराती। कहते हैं– बाबा, क्या सर्विस करें? बाबा यह राय देते हैं, ऐसे निमंत्रण पत्र लाखों छपवाओ। करेक्शन कर सकते हैं। कोई कोशिश कर ऐरोप्लैन से फेंकवाएँ। कागज़ अच्छा हों। बच्चे लम्बा–चौड़ा किताब बनवाते हैं, कुछ भी दरकार नहीं। यह पत्रे कोई अच्छे–2 क्वाटर्स में ऐरोप्लैन से गिरेंगे तो बहुतों को निमंत्रण मिलेंगे। ऐरोप्लैन विनाश के लिए भी हैं, तुम्हारी सर्विस के लिए भी हैं। अब यह काम गरीब तो न कर सके; परन्तु बाप गरीब निवाज़ है। गरीब ही वर्सा लेते हैं। वह साहुकार तो धन के ममत्व में फँस पड़ते हैं। सरेण्डर होने में हृदय विदीर्ण होता है। कन्याओं–माताओं का इस समय भाग्य उदय होता है। देखो, भण्डारे में माताएँ कितना प्यार से काम करती हैं। श्रीनाथ द्वारे में माताएँ ही सारा भोजन आए बनाती हैं। बाप कहते हैं– मुझे माताओं द्वारा इस भारत का, इन साधु–संत–विद्वान–आचार्य सबका उद्धार करना है। आगे चल तुम देखेंगे, वह भी आवेंगे। अभी तो वह लोग बहुत मगरूर रहते हैं। समझते हैं, हमारे जैसा कोई है नहीं। वह यह नहीं जानते, गृहस्थ–व्यवहार में रहते बाप ने राजयोग सिखाया है। उन्हों का हठयोग कर्म सन्यास अलग है। भगवान तो ज़रूर स्वर्ग का मालिक बनावेंगे। तो वह खुशी रहनी चाहिए। बाबा भक्तिमार्ग में भी ल०ना० का चित्र बड़े प्यार से रखता था। उसमें दिखाते हैं– लक्ष्मी, नारायण के पाँव दबा रही है। ऐसे–2 चित्रों से ही उल्टा उठाय गुरु लोग, पति आदि अपने पैर दबवाते हैं। तो बाबा को ख्याल आया, लक्ष्मी को दासी बनाय बिठाया है। क्या इनको दास–दासी नहीं हैं जो लक्ष्मी पाँव दबाती है? तो लक्ष्मी का चित्र उससे निकलवाय दिया। नारायण का चित्र देख बहुत खुश होता था, बहुत रोता भी था। क्यों? क्या होना है, वह कुछ पता नहीं। बस, दिल लग गई। तो चित्र वास्तव में हैं सब राँग।

किसके भी ऑक्युपेशन को जानते नहीं। तुम हर एक की बायोग्राफी बता सकते हो। बाप बच्चों को कितना समझाते हैं– अपना अथवा औरों का कल्याण करना है तो सर्विस पर लग जाओ। सुस्ती छोड़ दो। ऐसे पत्र छपवाओ। एम–ऑब्जेक्ट बिल्कुल क्लीयर है। वर्सा है डीटी वर्ल्ड सॉवरंटी। बाबा ने बोर्ड भी ऐसा बनवाया है न। एक तरफ ल०ना०, दूसरी शिव का चित्र, बीच में निमंत्रण। तो बच्चों को भी सर्विस पर लग जाना चाहिए। यह पर्चे खूब बाँटो। निमंत्रण तो सबको देना है। बेहद के बाप से स्वर्ग का वर्सा ज़रूर मिलना चाहिए। जहाँ बहुत लोग जाते हो ऐसी जगह पर भी बाँटो। निमंत्रण तो सबको देना है। बेहद के बाप से स्वर्ग का वर्सा ज़रूर मिलना चाहिए। जैसे नेहरू मरा, वहाँ कितने लोग गए होंगे। तुम वहाँ ऐरोप्लैन से फेंको, कोई नाराज़ नहीं होगा। ऑफीसर लोग को समझा कर देना चाहिए, खर्चा हम दे देंगे। कित(नों) को निमंत्रण मिलेगा। बॉम्बे में यह कर सकते हैं। बाहर से फॉरेनर्स आते हैं, कितने मनुष्य उन्हों को देखने जाते हैं। (ठीक) ऐसे समय में प्रबन्ध कर ऊपर से फेंकना चाहिए। कोई भी कुछ कह न सके। भल कोई किस बात को उठावे। कोर्ट में केस हो तो भी तुम सिद्ध कर बतावेंगे। अरे, बाप से स्वर्ग का वर्सा मिलना चाहिए, उनको फिर तुम सर्वव्यापी कह देते हैं। कुत्ते–बिल्ले में भी है। आगे हम यह कहते थे, अब वण्डर लगता है! शिवबाबा कहते हैं, दादा भी कहता है न कि आगे हम ऐसे कहते थे। बाबा कहते हैं– मेरी कितनी इन्सल्ट करते हैं। मैं स्वर्ग का मालिक बनाता हूँ, मुझे फिर कुत्ते–बिल्ले, पत्थर–ठिक्कर में ठोक दिया है। यह इन विद्वान–पंडितों ने सिखाया है। अब तुम बच्चों को श्रीमत मिलती रहती है। यह बहुत अच्छी मत है। यह निमंत्रण ऐरोप्लैन से फेंकने की कोशिश करो। एम.एल.ए. आदि की मीटिंग होती है, यह जाकर बाँटो। हम लोग धंधा करते थे तो ट्यूरिस्ट कार में जाकर पत्रा बाँटते थे, तो सबको पता पड़े। इनमें तो बहुत कम खर्चा है। गीताएँ आदि छपी सो छपी, अब वह भी नहीं छपानी है। इतना खर्चा करेंगे, सब धरती में दब जावेगी। इतने सब शास्त्र आदि वहाँ होते नहीं। फिर वह ही निकलेंगे। गीता में देखो, क्या–2 लिख दिया है– हे अर्जुन! भिन्डी खाने से यह होगा, बैंगन खाने से वो होगा। कुछ भी सार न रहा है। यह फिर भी ऐसे निकलेंगे। झुण्ड के झुण्ड अमरनाथ यात्रा पर जाते हैं। वहाँ जाकर पत्रे आदि बाँटने चाहिए। उनमें भल लिखा हुआ हो– जप–तप–तीर्थ आदि से मैं नहीं मिलता हूँ। 2/3/4 को आपस में मिलकर जाना चाहिए यात्रा पर। बाबा डायरैक्शन देते हैं, कैसे सर्विस को बढ़ाओ। यात्रा के लिए कब गवर्मेन्ट मना नहीं करेगी; परन्तु सेन्सीबुल खड़ा बात करने वाला चाहिए। फिमेल भी खड़ी होनी चाहिए, मजबूज चाहिए। ऐसे नहीं, ठण्डी लगे और गिर पड़े। कोई बड़ा आदमी साथ में ले लेना चाहिए। यह (पर्चे) बहुत अच्छी चीज़ है। दिन–प्रतिदिन तंत निकलता है। तुम ओरली भी समझाय सकते हो। भगवान तुम्हारा क्या लगता है? वह तो है गॉड फादर। सिर्फ भगवान, ईश्वर व परमात्मा कहने से पिता अक्षर नहीं आता। हम सब एक फादर के बच्चे ठहरे। गॉड फादर कहने से पिता अक्षर आता है। परमात्मा सर्वव्यापी है तो क्या हम सब परमात्मा पतित हो गए हैं! वह तो है ऊँच ते ऊँच। इनका ही यादगार भी है। तो बच्चों को सर्विस करने का शौक रखना चाहिए। यात्रा पर जाने से बहुत सर्विस कर सकते हैं। वह है जिस्मानी यात्रा; तुम हो रूहानी यात्रा। समझाना चाहिए, तुम कहाँ जाते हो? शंकर–पार्वती तो सूक्ष्मवतन में रहते हैं, सूर्य–चाँद से उस पार। यहाँ वह कहाँ से आए? यह सब भक्तिमार्ग के बोते(बातें) हैं। ऐसे–2 बहुत सर्विस कर सकते हैं। भक्ति पिछाड़ी बहुत धक्के खाते हैं। उनपर वर्ष पड़ता है। सबसे अच्छी भाषा हिन्दी है। उनको समझाओ, तुम अपने धर्म को भूले हुए हो। हिन्दू धर्म किसने स्थापन किया? सर्विस तो बहुत है। अब खड़ी हो जाओ। बाप आए हैं स्वर्ग का वर्सा देने, फिर माया नाक से पकड़ मुँह फेर लेती है। देखो, अभी–2 बाबा के पास दो बच्चे थे। बड़ा प्यार से बाबा चलाते थे। बैठे–2 माया ने नाक से पकड़ लिया। बाप तो बहुत प्यार से चलाते हैं;

क्योंकि समझते हैं थोड़ा भी गुस्सा करेगा तो मर जाएगा। बाबा को छोड़ा गोया मरा। तो हम गिराने के निमित्त बन जावेंगे; इसलिए बाबा कभी कुछ कहता नहीं; परन्तु खुद ही ऐसे काम करते हैं। बाबा को याद न करते हैं तो माया घूसा लगाय देती है। कहते हैं न– एक ही थप्पड़ से तुम्हारा मुख फेर दूँगा। यह एक ही धक से मुँह फेर देती है। बाबा नाम नहीं सुनाते, नहीं तो कहेंगे– बाबा, हमारी इज्ज़त लेते हैं। ऐसे–2 भी हैं; इसलिए माया से बहुत खबरदार रहना है। अब तुम बच्चे आए हो मात–पिता, बापदादा के पास सन्मुख। दुनिया को थोड़े ही पता है– बाप सन्मुख आए हैं। सब आत्माओं की ज्योत बुझी हुई है। एकदम बुझ नहीं जाती, थोड़ी लाइट रहती है, फिर बाबा आकर ज्ञान घृत डालते हैं। जब कोई मरते हैं तो दीवा जगाते हैं न! वह 12 दिन के लिए जगाते। यहाँ योग से हमारी आत्मा जगती रहती है। ज्ञान की धारणा करते रहते हैं। भारत का प्राचीन योग मशहूर है। वह निवृत्तिमार्ग वाले तो हठयोग सिखलाते हैं। अनेक प्रकार के योग हैं, फायदा क्या? कुछ भी नहीं। नीचे गिरते ही जाते हैं। सिवाय योगेश्वर के योग सिखाय न सके। योग सिखाने वाला ईश्वर वह है निराकार। बाप कहते हैं– मैं तुमको अभी योग सिखाय रहा हूँ न। अभी तुम्हारे 84 जन्मों का पार्ट पूरा हुआ। कोई का 84 जन्म का पार्ट है, कोई का 60 जन्म का, कोई का एक/दो जन्म का भी पार्ट है। तो ऐसे जब सर्विस करेंगे तब सबको पता पड़ेगा। विलायत के लिए भी छपवाए सकते हो। इनको भी समझाना है। भारत ही हेविन था, यह किसको पता नहीं है। हेविन में गॉड–गॉडेज़ राज्य करते थे, यह मानते हैं। तो इनको भी समझाना चाहिए। टाइम पड़ा हुआ है। बाबा राय देते हैं– ऐसे–2 सर्विस करो, युक्तियाँ रचो। ऐरोप्लैन से पत्रे फेंकने की सर्विस कोई कर दिखावे, फिर बाबा भी सराह(ना) करेंगे– कमाल है बच्चों की! बाकी अनुभव आदि कितना छपावेंगे। यह निमंत्रण सबको दो। यह सिवाय तुम्हारे और कोई दे न सके। साधुओं के झुण्ड में भी बाँटो। गाली तो खानी ही हैं। बाप गाली खावेंगे, क्या बच्चे नहीं खावेंगे! सितम सहन करेंगे, अत्याचार होंगे। यह तो ड्रामा में नूँध है। बाप कहते हैं, मेरी कितनी ग्लानि की है। यह बना–बनाया ड्रामा है, फिर भी होगा। अब तुम बच्चों को पारसबुद्धि बनाता हूँ। बाप बहुत भारी वर्सा देते हैं। ऐसे बाप को तो बहुत याद करना चाहिए। विश्व का मालिक बनाते हैं। कहते हैं– बच्चे, तुम जीते रहो। स्वर्ग का राज्य लो। ऐसे मीठे बाप को तुम याद नहीं कर सकते हो! याद से विकर्म विनाश होंगे। रहे कोई विकर्म तो है न! मम्मा–बाबा कितनी सर्विस करते हैं, ज्ञान–योग में रहते हैं, तो भी अभी तक कर्मभोग रहे हुए हैं। तो ख्याल करना चाहिए– हम तो सर्विस भी न करते हैं तो कितनी सज़ाएँ खावेंगे। सबका पापों का हिसाब–किताब चुक्तू होना है। बाबा उसमें सारा सा० कराते हैं– तुम हमारा बनकर फिर भी फारकती दे दी। तुम ट्रेटर्स बने थे। फिर कड़ाई से कटवाएँगे। बच्चों ने सज़ाओं का भी सा० किया है। (ऐरोप्लैन से पर्चे गिराने की परमिशन देते नहीं हैं) समझाना पड़े, कौरव तो पांडवों को सताते थे न। पहले–2 तो आप समान बनाना पड़े, तब कुछ मंजूरी दे सकते हैं। ज्ञान से जब प्रभावित होते हैं तब उनसे काम निकल सकता है। बहुत प्रेम–नम्रता से समझाना है। कलंक तो लगेंगे ही। कलंक लगे तब तो कलंकीधर बनेंगे। तुम कलंकीधर भी हो। कृष्ण अगर होता तो उनको एकदम चटक पड़े चींटियों माफिक, मनुष्य खड़े हो जाएँ, तुम बैठ न सको। अच्छा, मीठे, सदा सलामत रहने वाले बच्चों को यादप्यार, गुडमॉर्निंग।